WEEK 22 MONDAY

हिन्दी - विभाग

डॉ० कविता कुमारी सिंह

P.G, II Sem.

विषय — हिन्दी उपन्यास — उद्भव और विकास का शेष भाग

प्रेमचन्द समस्याओं के युग में जी रहे थे। उन्होंने अपने उपन्यास में अपने युग के सभी समस्याओं के तह में जाकर उसे पकड़ा है। 'निर्मला' में अनमेल विवाह एवं विधवा विवाह, कर्मभूमि में किसान-आन्दोलन, अछूतोद्धार, आवास समस्या आदि उठाया है।

'गोदान' प्रेमचन्द की घोर यथार्थवादी रचना है। मजदूर बनना होरी जैसे किसान की नियति है और शायद उसी के बहाने गोदान 'किसान' के मजदूर में रूपान्तर की कथा है। प्रेमचन्द के उपन्यासों में कल्पना और अनुभव का विराट संसार मिलता है। तत्कालीन सामाजिक समस्याओं को अपनी रचना में निर्वाह किया है। उनकी रचनाओं में यथार्थवादी आग्रह निरन्तर गहरा होता गया है।

प्रेमचन्द युग के निराला ने कुछ रोमांटिक उपन्यास लिखे। जैसे अप्सरा, अलका आदि।

जयशंकर प्रसाद तथा विश्वम्भरनाथ शर्मा का नाम भी इस क्षेत्र में उल्लेखनीय है। प्रसाद जी ने अपने उपन्यासों में अपनी विलक्षण प्रतिभा का परिचय दिया है। कंकाल, इरावती तथा तितली इनकी प्रतिभा का चमत्कृत रूप है।

अज्ञेय, जैनेन्द्र एवं इलाचन्द जोशी उपन्यास को बाहर से भीतर की ओर, समाज से व्यक्ति की ओर, सामान्य से विशेष की ओर लेकर निकल पड़ते हैं। जैनेन्द्र अपने उपन्यास में वस्तु और संवेदना, मानसिक संघर्ष, संवेगों एवं प्रतिक्रियाओं के प्रति काफी सचेत हैं। इलाचन्द जोशी जहाँ एक ओर मन से घटित होने वाली घटनाओं में रुचि रखते हैं तो दूसरी ओर समाजवादी भी हैं। 'प्रेत और छाया' जहाज का पंछी उनके चर्चित उपन्यास हैं।

सूक्ष्म सौंदर्यबोध, कलात्मक, ईमानदारी एवं अभिनव शिल्प योजना के लिहाज से अज्ञेय बेजोड़ कलाकार हैं। अज्ञेय हिन्दी उपन्यास को व्यक्तिवादी, आधुनिकतावादी संकरे रास्ते पर दूर तक खींच कर ले जाते हैं। 'शेखर एक जीवनी' एक व्यक्ति का अभिन्नतम निजी दस्तावेज है। 'नदी के द्वीप' उनके प्रमुख उपन्यास हैं। मनोवैज्ञानिक उपन्यासों की परम्परा में

डॉ० देवराज' की 'अजय की डायरी' एवं धर्मवीर भारती के 'गुनाहों का देवता' का भी उल्लेखनीय स्थान है।

इसके समानान्तर प्रगतिवादी कथाकारों की नयी पीढ़ी मार्क्सवादी दर्शन के सहारे सामाजिक समस्याओं की खोज में उपन्यास रचना में उतरी। इस श्रेणी के उपन्यासकारों व्यक्तिवाद की तंग गलियों में भटक रहे उपन्यास को खींचकर जीवन की बुनियादी समस्याओं से जोड़ने का प्रयास किया। यशपाल अपने उपन्यास 'देशद्रोही' 'मनुष्य के रूप', झूठा-सच में प्रगतिवादी नजरिए का खुला इजहार करते हैं। वे नारी स्वतंत्रता के बड़े पक्षधर थे। अमृतराय (नागफनी का देश, हाथी के दाँत) भैरव प्रसाद गुप्त आदि उपन्यासकार इस पीढ़ी के हैं।

समाज को दृष्टि में रखकर लिखे गये उपन्यासों की परम्परा को प्रेमचन्द ने जहाँ छोड़ा था उसे आगे बढ़ाने का काम भगवती चरण वर्मा, अमृत लाल नागर, राजेन्द्र यादव आदि ने किया। अमृत लाल नागर व्यापक कल्पना शक्ति एवं विराट अनुभव वाली जीवित कथा परम्परा के सबसे सशक्त लेखक थे।

आंचलिक उपन्यासकारों की पीढ़ी ने आजाद भारत में गाँधी के सपने को सिर धुनते

28 MAY
SATURDAY

देखा था। प्रेमचन्द ने भारतीय किसान के सामने दो ही रास्ते छोड़ रखे थे, या तो वे अपने को नष्ट हो जाने दें, या विद्रोह करें। आंचलिक उपन्यासों ने विद्रोह को बिन्दु बनाया। नागार्जुन एवं फणीश्वरनाथ रेणु ने इस दिशा में सार्थक शुरुआत की थी। नागार्जुन की रचनाओं में विद्रोह एवं संघर्ष की कुलबुलाहट है। आंचलिकता को शिल्प में बदल देने का श्रेय रेणु को है। रेणु के 'मैला आँचल', 'जुलूस' आदि प्रमुख उपन्यास हैं।

उपन्यासों का विकास देखने पर ज्ञात होता है कि यह अपने विकास-काल से सदैव उन्नति के पथ पर अग्रसर होता रहा है। आज उपन्यास-साहित्य केवल मनोरंजन की वस्तु नहीं है, अपितु जीवन की उलझनों को सुलझाने के साथ मन की गहराइयों में बैठ कर उसके विविध रूपों को चित्रित करता है। आधुनिक हिन्दी-उपन्यासों का क्षेत्र भविष्य की उज्जवलता की ओर संकेत करता है।

29 SUNDAY

NOTES